

शान्त समय क्या होता है?

मसीही जीवन के बारे में प्रश्न

शान्त समय एक मसीही के प्रतिदिन के जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग है, क्योंकि यही वह समय होता है, जब वह अपने घर में एक सुविधापूर्ण और इसकी अपेक्षा एक एकान्त वाले स्थान में (अक्सर) चला जाता है, जहाँ वह बिना किसी विचलन के परमेश्वर की निकटता में आ सकता है। एक मसीही विश्वासी और परमेश्वर के मध्य एक मुलाकात के लिए शान्त समय प्रत्येक दिन का एक पृथक किया हुआ भाग है। इसमें मसीही विश्वासी के द्वारा स्वयं के लिए चुने हुए बाइबल के पाठ का पठन और प्रार्थना सम्मिलित होते हैं।

प्रत्येक मसीही विश्वासी को परमेश्वर के साथ समय व्यतीत करने के लिए शान्त समय की आवश्यकता होती है। यदि स्वयं यीशु को इसकी आवश्यकता पड़ी थी, तो हमें इसकी कितनी अधिक होगी? यीशु अक्सर अपने पिता के साथ नियमित रूप से वार्तालाप करने के लिए दूर स्थानों में चला जाता था, जैसा कि पवित्रशास्त्र के निम्नलिखित वचन हमें बताते हैं: "तब यीशु अपने चेलों के साथ गतसमनी नामक एक स्थान में आया और अपने चेलों से कहने लगा, 'यहीं बैठे रहना, जब तक मैं वहाँ जाकर प्रार्थना करूँ'" (मत्ती 26:36)। भोर को दिन निकलने से बहुत पहले, वह उठकर निकला, और एक जंगली स्थान में गया और वहाँ प्रार्थना करने लगा" (मरकुस 1:35)। "परन्तु वह जंगलों में अलग जाकर प्रार्थना किया करता था" (लूका 5:16)।

शान्त समय की लम्बाई कोई अर्थ नहीं रखती है, परन्तु मनन के लिए पर्याप्त समय होना चाहिए और जो कुछ पढ़ा गया है, उसके बारे में प्रार्थना करनी चाहिए या मन में आने वाली किसी और बात के बारे में प्रार्थना करनी चाहिए। परमेश्वर की निकटता में आना एक प्रतिफल देने वाला अनुभव है, और एक बार जब शान्त समय की नियमित आदत बन जाती है, तो इसके पश्चात् अध्ययन और प्रार्थना के लिए इस विशेष समय के प्रति उत्सुकता से प्रतीक्षा बनी रहती है। यदि हमारी समय सारणी इतनी अधिक भरी हुई है और इतनी अधिक दबाव डाल रही है कि हमें ऐसा आभासित होता है कि हम अपने स्वर्गीय पिता से मिलने के लिए प्रतिदिन कुछ समय नहीं ले सकते हैं, तो "व्यस्तता" को हटाने के लिए अपने कार्यक्रमों का पुनरीक्षण किए जाने की आवश्यकता है।

सावधानी रहने के लिए ध्यान देने वाली एक बात: कुछ पूर्वी धर्मों में, जो ध्यान के सिद्धान्तों को सिखाते हैं, किसी एक ध्वनि या किसी एक विशेष शब्द को दोहराने के ऊपर ध्यान केन्द्रित करके "मन को खाली करने" के ऊपर निर्देश सम्मिलित हैं। ऐसा करना शैतान के प्रवेश के लिए और हमारे मनों में प्रलय ले आने के लिए स्थान को छोड़ देता है। इसके अपेक्षा, मसीहियों को फिलिप्पियों 4:8 में प्रेरित पौलुस के दिए परामर्श का पालन करना चाहिए: "इसलिये हे भाइयो, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं — अर्थात् जो भी सद्गुण और प्रशंसा की बातें हैं — उन पर ध्यान लगाया करो।" इन सुन्दर विचारों के

साथ एक व्यक्ति को अपने मन को भरने से सहायता नहीं मिल सकती है, अपितु शान्ति मिल सकती है और परमेश्वर को प्रसन्न किया जा सकता है। हमारा शान्त समय मनो को खाली करने के माध्यम से नहीं अपितु हमारे मनो के नए हो जाने (रोमियों 12:2) के माध्यम से परिवर्तन का समय होना चाहिए।

स्रोत / Source: <https://www.gotquestions.org/Hindi/Hindi-quiet-time.html> | English: <https://www.gotquestions.org/quiet-time.html>

www.GotQuestions.org · <https://www.gotquestions.org/Hindi> · © Copyright
Got Questions Ministries · questions@gotquestions.org